पी–एच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तावित
शोध–प्रारूप
सामाजिक विज्ञान संकाय (राजनीति विज्ञान)

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा।

–: शोध शीर्षक :–

आचार्य नरेन्द्र देव के समाजवादी विचारों की वर्तमान समय में प्रासंगिकता : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

शोध पर्यवेक्षक
डॉ० मो. जावेद अनवर
सहायक प्राध्यापक
राजनीति विज्ञान विभाग
समस्तीपुर महाविद्यालय, समस्तीपुर

शोधार्थी
दिनेश कुमार राम
पैट क्रमांक– E2216008
सत्र– 2021–22
नामांकन क्रमांक– 30

पी–एच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध–प्रारूप

सामाजिक विज्ञान संकाय (राजनीति विज्ञान)

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा।

1. शोध–समस्या का शीर्षकः

आचार्य नरेन्द्र देव के समाजवादी विचारों की वर्तमान समय में प्रासंगिकता : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

2. प्रस्तावना / शोध के मुद्दे / समस्याः–

समाजवादी शिक्षाविद् आचार्य नरेन्द्रदेव जी का व्यक्तित्व भारत के गणमान्य साहित्य समाज सेवियों में समादृत है। भारतीय राजनीति को गांधी जी ने अध्यात्म से जोड़ा था और आचार्य नरेन्द्रदेव ने दर्शन से। वे समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र और प्राच्य विद्या में पारंगत होने के साथ–साथ गांधी जी की भांति पंचशीली नैतिकता के प्रबल पक्षधर रहे और राष्ट्रचेता भी। वे गरम दल की राजनीति की ओर आकृष्ट हुए, फिर मार्क्सवादी चिन्तन की ओर। भारत में जिन लोगों ने समाजवादी चिन्तन की नींव डाली उनमें वे अग्रणी थे। दूसरी ओर बौद्ध करुणा ने उन्हें आकृष्ट किया और बौद्ध वांग्मय के परिशीलन में लगे। वे एक ओर लोकमान्य तिलक और महात्मा गांधी के व्यक्तित्वों की ओर आकृष्ट हुए तो दूसरी ओर राजर्षि, टण्डन और पण्डित नेहरू की मैत्री के स्नेह पाश में बंध गये। आचार्य जी इस युग के अर्जुन थे। अपने को झुलसाकर भी विराट सत्य का साक्षात्कार करना चाहते थे। अपने को सबके प्रति समर्पित करके ऐसी ही राह पर चलना चाहते थे जो सबकी राह हो, पर ऐसी हो कि उस पर चलने का अबतक किसी ने साहस न किया हो। आचार्य जी की जीवन यात्रा भी ऐसी कुछ थी। देखने में द्वन्द से घिरे हुए, पर आचार में स्पष्ट और कठोर निर्णय लेने वाले आचार्य जी गांधी जी की प्रतिमूर्ति थे अपनी शीतल तेजस्विता में। आचार्य जी प्रत्येक विचारधारा की गहराई में जाते थे और अपनी अंतरात्मा में उसके उपयोग की सीमाओं का परिमापन भी करते थे। उनका विचार था कि इस देश में रहने वाले सभी धर्मों के लोग पारस्परिक सहयोग द्वारा अपने को एक समाज का मानें तथा उसके विकास के लिए कार्य करें, तभी वास्तव में समाज की उन्नति हो सकती हैं।

15/04/24

15.4.24

यदि प्राचीन युग को बुद्ध और ईसा जैसे महापुरूषों को जन्म देने का गौरव प्राप्त है तो आधुनिक युग भी स्वामी विवेकानन्द, दयानन्द सरस्वती, राजा राम मोहन राय, महात्मा गाँधी, आचार्य नरेन्द्रदेव तथा जयप्रकाश नारायण जैसे विभूतियों को जन्म देकर कुछ कम गौरवान्वित नहीं हुआ है। वस्तुतः स्वतंत्रता संघर्ष के अंतिम पच्चीस वर्षों में आचार्य नरेन्द्रदेव का महत्वपूर्ण नेतृत्व एवं योगदान रहा है। आचार्य जी ने अपने सम्पूर्ण जीवन का लक्ष्य ही सकल दृष्टि से मानवीयता की पीड़ा मिटाने हेतु ''वसुधैव कुटुम्बकम'' के धारणा के आधार पर मानव सेवा के लिये अर्पित कर दिये थे। अगस्त सन् 1947 ई. में भारत के स्वतंत्र होने के बाद भी राजसत्ता का मोह छोड़कर जिस निस्पृहता से नरेन्द्रदेव ने राष्ट्र की सेवा की तथा राष्ट्र की विभिन्न समस्याओं को सुलझाने का प्रयास किया, वह स्वतंत्र भारत के इतिहास के लिये चिरस्मरणीय रहेगा। विशेषकर आज की सामाजिक, राजनीतिक, शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक परिस्थिति हेतु आचार्य जी का विचार खास तौर पर उपयोगी है, क्योंकि आज की नई पीढ़ी पूर्व–पाश्चात्य के मध्य, नूतन–पुरातन के मध्य, उचित–अनुचित के मध्य द्वन्द्व में फँसी हुई है। आचार्य जी यह स्वीकार करते हैं कि जनतंत्र केवल एक शासन पद्धति की नहीं वरन् एक जीवन पद्धति भी है। इसलिए जनतंत्र के आदर्शों को केवल राजनीतिक जीवन तक ही सीमित नहीं रखा जा सकता, प्रत्युत मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में जनतांत्रिक आदर्शों का पालन आवश्यक है। धार्मिक, जातिगत तथा पार्थक्यपूर्ण भावनाएँ स्वतंत्र भारत के विकास में बाधक है। इसलिये स्वतंत्र भारत के स्थायित्व के लिये व्यापक जन–शिक्षा अनिवार्य है जिसके द्वारा जनता में राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा राष्ट्रीय चेतना जागृत हो सकेगी। प्रस्तुत अध्ययन में आचार्य नरेन्द्र देव के समाजवादी विचारों का अध्ययन किया जाएगा तथा इनके विचारों का आधुनिक समाज पर पड़ने वाले प्रभावों का विश्लेषण किया जाएगा।

इस प्रकार उपरोक्त तथ्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि आज के स्वतंत्र भारत के सामाजिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों के बारे में आचार्य नरेन्द्र देव के विचारों का अत्यधिक महत्त्व है। यद्यपि वे समाजवाद के वैज्ञानिक स्वरूप अर्थात् वैज्ञानिक समाजवाद की व्याख्या मार्क्सवाद के सिद्धान्तों के आधार पर स्पष्ट किये। समाजवाद की प्राप्ति हेतु आचार्य जी प्रगतिशील तत्त्वों को प्रोत्साहन प्रदान

15/04/2024

15.4.24

करते थे। वे युवा छात्रों, कृषकों, श्रमिक वर्ग आदि के संगठन निर्माण तथा उनके द्वारा रचनात्मक कार्यक्रम के प्रबल समर्थक थे। अतः आचार्य नरेन्द्रदेव स्वतंत्र भारत के समाज के निर्माण के कार्य में क्रांतिकारी तथा प्रगतिवादी कार्यक्रमों को महत्त्व प्रदान करते थे। आचार्य नरेन्द्रदेव के शिक्षा के प्रति लगाव को स्पष्ट करते हुए कहा जा सकता है कि उनके अध्ययन, अध्यवसाय को जितनी तरह से और जितनी गहराई से देखा जाये, उतनी ही यह बात स्पष्ट होती है कि यदि वह शिक्षक ही रहते तो भारतीय विचारधारा को, भारतीय शिक्षा–पद्धति तथा जिज्ञासु समाज को एक अपूर्व देन दे जाते। यह आज उनके जानने वालों के मन में खेद का विषय बना हुआ है कि यदि उनके शरीर ने उनका साथ दिया होता, बीमारी ने उन्हें जर्जर न कर दिया होता, राजनीति ने उनका समय न बांटा होता तो वे भारतीय ज्ञान भंडार को अक्षय दान दिए होते।

3. पूर्व अध्ययन की समीक्षाः–

आचार्य नरेन्द्र देव के समाजवादी विचारों के संदर्भ में अभी तक कोई भी व्यापक एवं विशद् शोध कार्य संपादित नहीं किये गये हैं। अतः प्रस्तुत शोध कार्य इस कमी को पूरा करने में सहायक होगा। सिंह, भवगती शरण (1991) आधुनिक भारत के निर्माताः आचार्य नरेन्द्रदेव, प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण विभाग, भारत सरकार नई दिल्ली; पाण्डे, रवि प्रकाश (1989), भारतीय सामाजिक विचार, विजय प्रकाशन, वाराणसी; घिघियाल, गोदावरी (1987), आधुनिक भारतीय सामाजिक विचारकः आचार्य नरेन्द्रदेव, वाराणसी; लाल, मुकुट बिहारी (1987), आचार्य नरेन्द्रदेव : युग और नेतृत्व, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी, केलकर, ओम प्रकाश (1968), आचार्य नरेन्द्रदेव का समाजवादी दर्शन, चेतन साहित्य प्रकाशन, फैजाबाद, ठाकुर कृष्ण नन्दन (1979), आचार्य नरेन्द्रदेव के समाजवादी चिंतन के विभिन्न आयाम, एस.चन्द एण्ड कम्पनी लिमिटेड, रामनगर, नई दिल्ली, शरद, ओंकार (1969), आचार्य नरेन्द्रदेव और समाजवादी आन्दोलन, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, दीपक, ओम प्रकाश (1985), भारत में राष्ट्रीयता और समाजवाद, ज्ञानगंगा लिमिटेड, बनारस, दीक्षित, रमेश (1995), भारत में समाजवाद का इतिहास, सन्डे नई दुनिया, बनारस, त्रिपाठी, के. एन. (2015), समाजवादी दर्शन और भारतीय राष्ट्रवाद, भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, आगरा, आदि आचार्य जी से संबंधित पूर्व अध्ययन सामग्री है।

15/04/2024

15.4.24

प्रस्तुत शोध का विषय ''आचार्य नरेन्द्र देव के समाजवादी विचारों की वर्तमान समय में प्रासंगिकता : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन'' है। इस विषय पर शोध–कार्य बहुत ही कम हुए है, परन्तु उपरोक्त कार्यों के सहारे प्रस्तुत शोध–कार्य को संपादित करने में सहायता मिलेगी।

4. शोध का महत्व एवं प्रासंगिकताः–

आचार्य नरेन्द्रदेव के व्यक्तित्व, उनकी विद्वता एवं वाक्पटुता काफी विलक्षण था। वे समाजवाद के एक बड़े नेता तथा विचारक थे। उनके सिद्धांत एवं व्यवहार के बीच काफी समन्वय था अर्थात् जिन तथ्यों का वे सिद्धान्त के रूप में स्वीकार करते थें, उसे अक्षरशः अपने जीवन में उतारने का प्रयास भी करते थे। आचार्य नरेन्द्रदेव समाजवादी आंदोलन में एक अहम शख्सियतों में से एक थे। भारत में समाजवाद को राष्ट्रीयता एवं किसानों के सवाल से जोड़ना, आचार्य जी की भारतीय समाजवाद को एक स्थायी देन है। आचार्य नरेन्द्र देव के लिए मानवता ही समाजवाद का आधार है। समाजवाद आर्थिक स्वतंत्रता के साथ–साथ व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर भी पुरजोर बल देता है। उनके अनुसार व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास समाजवादी समाज में ही हो सकता है। समाजवाद मानव स्वतंत्रता की कुँजी है। एक स्वच्छन्द समाज में सम्पूर्ण स्वतंत्र मानवत्व की प्रतिष्ठा समाजवाद के द्वारा ही हो सकता है। समाजवाद ही एक सुन्दर, सशक्त मानव संस्कृति, जिसका आधार स्वच्छन्दता, समानता एवं बंधुत्व हो निर्मित कर सकता है। समाजवाद जिस नई सामाजिक व्यवस्था की कल्पना करता है उसमें आजकल की भाँति भीषण आर्थिक विषमताएँ न पाई जाएगी किन्तु इसका अभिप्राय यह नहीं है कि समाजवाद सार्थक एकरूपता स्थापित करना चाहता है। समाजवादी समाज में पूर्ण एकरूपता तथा पूर्ण समाज लाने का वायदा नहीं किया जा सकता। समाजवाद यह अवश्य करेगा कि

15/04/2024

15.4.24

शोषक वर्ग का अन्त करके असमानता का आर्थिक आधार नष्ट कर देगा और सबको अवसर की समानता प्रदान करेगा। इस प्रकार आचार्य नरेन्द्रदेव का विचार था कि वर्तमान परिस्थिति में स्वतंत्र भारत में क्रांतिकारी विकास की आवश्यकता है, जिसके लिये किसान, मजदूर तथा निम्न मध्यमवर्गीय शिक्षित इन तीनों वर्गों का सहयोग तथा समन्वित प्रयास आवश्यक है।

5. शोध का उद्देश्यः–

प्रस्तावित अध्ययन का निम्नलिखित उद्देश्य होगा–

- आचार्य नरेन्द्र देव के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन करना।
- आचार्य नरेन्द्र देव के समाजवादी विचार का अध्ययन करना।
- आचार्य नरेन्द्र देव के समाजवादी विचारों का वर्तमान समय में प्रासंगिकता का विश्लेषण करना।

6. परिकल्पनाएंः–

प्रस्तावित अध्ययन निम्नलिखित परिकल्पनाओं पर आधारित होगा–

- आचार्य नरेन्द्र देव ने भारतीय समाजवादी चिंतन को मजबूती प्रदान की है।
- आचार्य नरेन्द्र देव ने भारतीय राजनीति को दिशा दी हैं।
- भारत में समतामूलक समाज के निर्माण में समाजवाद की प्रमुख भूमिका रही है।

7. ज्ञान के क्षेत्र में योगदानः–

स्वतंत्र भारत में शिक्षा, शिक्षण एवं शिक्षक के विकास के संदर्भ में आचार्य नरेन्द्रदेव के विचार के महत्त्व को स्पष्ट करते हुए स्वर्गीय जयप्रकाश नारायण ने लिखा है कि आचार्य नरेन्द्रदेव के विचारों तथा जीवन के संबंध में जितनी भी जानकारी सर्वसाधारण विशेषकर युवकों को दी जा सकें, देश के सामाजिक, राजनीतिक एवं शिक्षण व्यवस्था के लिये उतनी ही लाभकारी होगी। सार्वजनिक जीवन की जो आज दुर्दशा है तथा युवक जिस प्रकार दिग्भ्रमित हो रहे हैं उस परिस्थिति में आचार्य जी से संबंधित साहित्य जन–मानस पर विशेषकर शिक्षक, विद्यार्थी तथा सार्वजनिक कार्यकर्त्ताओं के मानस पर सकारात्मक प्रभाव डाल सकता

15/04/2024

है। वैसे तो सारे देश में सार्वजनिक जीवन स्तर गिरता जा रहा है और विद्यार्थी समाज दिशाहीन तथा नकारात्मक बनता जा रहा है।

8. अध्ययन पद्धतिः—

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का अध्ययन ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में दार्शनिक आधार पर विश्लेषणात्मक विधि से किया जायेगा। शोध अध्ययन में आचार्य नरेन्द्र देव के द्वारा लिखित ग्रंथ, अन्य शिक्षा संबंधी ग्रंथ, ऐतिहासिक ग्रंथ, शोध अध्ययन से सम्बद्ध तथा पाठ्य—सामग्री, शैक्षिक प्रतिवेदन, तथा विभिन्न पत्र—पत्रिकाओं आदि के द्वारा शोध प्रबन्ध पूरा किया जायेगा। स्रोत के रूप में आचार्य नरेन्द्र देव साहित्य, देश में अवस्थित आचार्य जी द्वारा स्थापित विभिन्न संस्थाएं तथा समीक्षात्मक साहित्य का सहारा लिया जाएगा।

9. स्रोत सामग्री की उपलब्धताः—

प्रस्तावित शोध— कार्य को पूरा करने के लिए मौलिक और सामान्य स्रोतों से तथ्यों, विवरणों, घटनाक्रमों की सापेक्षताओं को संग्रह किया जायगा। मौलिक स्रोत के अन्तर्गत अभिलेख, वक्तव्य, घोषणाएँ, आत्मकथाएँ, डायरी, अप्रकाशित शोध ग्रन्थ आदि स्रोतों में तथ्य संग्रह किए जाएँगे। सामान्य स्रोत के अन्तर्गत प्रकाशित पुस्तकों, पत्रिकाओं में प्रकाशित लेख, तथा समाचार पत्रों की सूचनाएँ आदि स्रोत सम्मिलित किए जाऐंगे। इस विषय पर नेशनल अभिलेखागार, नई दिल्ली, नेहरू मेमोरियल म्यूजियम और पुस्तकालय, नई दिल्ली, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय पुस्तकालय, नई दिल्ली, दिल्ली विश्वविद्यालय पुस्तकालय, खुदावक्श पुस्तकालय, पटना, नेशनल लाइब्रेरी, कलकत्ता तथा केन्द्रीय पुस्तकालय, ल.ना.मिथिला विश्वविद्यालय में पर्याप्त स्रोत सामग्री उपलब्ध है।

10. कार्य योजनाः—

प्रस्तावित शोध—प्रबन्ध में निम्नलिखित अध्याय होंगेः—

प्रथम अध्याय : आचार्य नरेन्द्र देव का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

द्वितीय अध्याय : आचार्य नरेन्द्र देव का समाजवाद सम्बन्धी विचार

तृतीय अध्याय : आचार्य नरेन्द्र देव के चिन्तन में नीति एवं सदाचार

चतुर्थ अध्याय : आचार्य नरेन्द्र देव के चिन्तन का भारतीय राजनीति पर प्रभाव

15/04/2024

15.4.24

पंचम अध्याय : आचार्य नरेन्द्र देव के समाजवादी विचारों का वर्तमान समय में प्रासंगिकता

षष्टम् अध्याय : निष्कर्ष

11. संदर्भ ग्रन्थ सूची:–

1. सिंह भगवती शरण, 1991 आधुनिक भारत के निर्माता–आचार्य नरेन्द्रदेव, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली,
2. सिंह सुधा, 1988, आचार्य नरेन्द्रदेव, एक सामाजिक विचारक पी–एच.डी. शोध–प्रबन्ध (अप्रकाशित) समाजशास्त्र विभाग, सामाजिक विज्ञान संकाय, काशी विद्यापीठ, वाराणसी,
3. देव, आचार्य नरेन्द्र (1949) डेमोक्रेटिक सोशलिज्म इन इंडिया एण्ड इट्स इम्पैक्ट ऑन इंडियन एजुकेशन सिसटम, एस. चांद एण्ड कंपनी, नई दिल्ली।
4. देव, आचार्य नरेन्द्र (1949) आचार्य नरेन्द्र देव, युग और नेतृत्व, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणासी।
5. देव, आचार्य नरेन्द्र (1949) राष्ट्रीयता और समाजवाद, ज्ञानमंडल, बनारस।
6. देव, आचार्य नरेन्द्र (1949) समाजवाद और राष्ट्रीय क्रान्ति, आगरा।
7. देव, आचार्य नरेन्द्र (1949) सोशयलिज्म एण्ड दी नेशनल रिवोलुशन, पद्मा पब्लिकेशन, बम्बई।
8. देव, आचार्य नरेन्द्र (1949) माई रीकलेक्शनस एण्ड कमेमोरेशन, वी. एस. केसकर तथा मेमन द्वारा सम्पादित, नेशल बुकइस्ट ऑफ इंडिया, नई दिल्ली।
9. देव, आचार्य नरेन्द्र (1949) दी इंडियन स्ट्रगल्स, दी नेक्स्ट फेज सोशलिस्ट टेक्स्ट नं.–5 ऑल इंडिया कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी पब्लिकेशन, बम्बई।
10. देव, आचार्य नरेन्द्र (1949) टुवार्ड्स एजुकेशन एण्ड सोसाईटी ब्रह्मानन्द द्वारा सम्पादित सेन्टर ऑफ एप्लाइड पॉलिटिक्स।
11. केलकर, ओम प्रकाश (1968), आचार्य नरेन्द्रदेव का समाजवादी दर्शन, चेतन साहित्य प्रकाशन, फैजाबाद।
12. ठाकुर, कृष्ण नन्दन (1979), आचार्य नरेन्द्रदेव के समाजवादी चिंतन के विभिन्न आयाम, एस.चन्द एण्ड कम्पनी लिमिटेड, रामनगर, नई दिल्ली।

15/04/2024

15.4.24

13. शरद, ओंकार (1969), आचार्य नरेन्द्रदेव और समाजवादी आन्दोलन, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
14. दीपक, ओम प्रकाश (1985), भारत में राष्ट्रीयता और समाजवाद, ज्ञानगंगा लिमिटेड, बनारस।
15. दीक्षित, रमेश (1995), भारत में समाजवाद का इतिहास, सन्डे नई दुनिया, बनारस।
16. त्रिपाठी, के. एन. (2015), समाजवादी दर्शन और भारतीय राष्ट्रवाद, भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, आगरा।

पर्यवेक्षक का हस्ताक्षर

शोधार्थी का हस्ताक्षर